

---

# Vishalakshi Stotram Vyasakritam

---

## विशालाक्षीस्तोत्रम् व्यासकृतम्

---

### Document Information

Text title : Vishalakshi Stotram Vyasakritam

File name : vishALakShIstotramvyAsakRRitaM.itx

Category : devii, devI, stotra

Location : doc\_devii

Transliterated by : PSA Easwaran

Proofread by : PSA Easwaran

Description/comments : From Saurapurana

Latest update : December 11, 2021

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 16, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

विशालाक्षीस्तोत्रम् व्यासकृतम्



(सौरपुराणे अष्टमाध्यायान्तर्गतम्)

व्यास उवाच-

विशालाक्षि नमस्तुभ्यं परब्रह्मात्मिके शिवे ।

त्वमेव माता सर्वेषां ब्रह्मादीनां दिवोकसाम् ॥ १५ ॥

इच्छाशक्तिः क्रियाशक्तिर्ज्ञानशक्तिस्त्वमेव हि ।

ऋज्वी कुण्डलिनी सुक्ष्मा योगसिद्धिप्रदायिनी ॥ १६ ॥

स्वाहा स्वधा महाविद्या मेधा लक्ष्मीः सरस्वती ।

सती दाक्षायणी विद्या सर्वशक्तिमयी शिवा ॥ १७ ॥

अपर्णा चैकपर्णा च तथा चैकैकपाटला ।

उमा हैमवती चापि कल्याणी चैव मातृका ॥ १८ ॥

ख्यातिः प्रज्ञा महाभागा लोके गौरीति विश्रुता ।

गणाम्बिको महादेवी नन्दिनी जातवेदसी ॥ १९ ॥

सावित्री वरदा पुण्या पावनी लोकविश्रुता ।

आयती नियती रौद्री दुर्गा भद्रा प्रमाथिनी ॥ २० ॥

कालरात्री महामाया रेवती भूतनायिका ।

गौतमी कौशिकी चाऽऽर्था चण्डी कात्यायनी सती ॥ २१ ॥

वृषध्वजा शूलधरा परमा ब्रह्मचारिणी ।

महेन्द्रोपेन्द्रमाता च पार्वती सिंहवाहना ॥ २२ ॥

एवं स्तुत्वा विशालाक्षी दिव्यैरतैः सुनामभिः ।

कृतकृत्योऽभवद्व्यासो वाराणस्यां द्विजोत्तमाः ॥ २३ ॥


वाराणस्यां विशालाक्षी गङ्गा विश्वेश्वरः शिवः ।

भक्तिः पशुपतौ तत्र दुर्लभं हि चतुष्टयम् ॥ २४ ॥


यः पश्यति विशालाक्षीं स्नात्वा गङ्गाम्भसि द्विजाः ।  
अश्वमेधसहस्रस्य फलमाप्नोत्यनुत्तमम् ॥ २५ ॥  
वाराणस्यारतु माहात्म्यमिति किञ्चिन्मयोदितम् ।  
यः पठेच्छृणुयाद्वाऽपि याति माहेश्वरं पदम् ॥ २६ ॥  
इति सौरपुराणे अष्टमाध्यायान्तर्गतं व्यासकृतं  
विशालाक्षीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

Encoded and proofread by PSA Easwaran

---

——  
*Vishalakshi Stotram Vyasakritam*

pdf was typeset on September 16, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

